आयुष पद्धतियों के विषय में मिथ्या और तथ्य

मिथ्या: ए.एस.यू. पद्धतियां वैज्ञानिक नहीं हैं।

तथ्य: **ए.एस.यू. पद्धतियां समय परीक्षित कूटिकृत सिद्धांतों और अवधारणाओं पर आधारित हैं। इन्हें इनकी सुरक्षा और प्रभावकारिता के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रामाणित किया गया है।**

मिथ्या: आयुर्वेदिक, सिद्ध, यूनानी एवं होम्योपैथी औषधियों में अमानकीकरण।

तथ्य: **आयुर्वेदिक, सिद्ध एवं यूनानी औषधियां ओषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 के तहत विनियमित हैं। इसके अंतर्गत मानक प्रचालन प्रक्रियाओं और अच्छी विनिर्माण पद्धतियों सहित भेषज संहितागत मानकों का अनुपालन अनिवार्य है।**

मिथ्या: आयुर्वेद, सिद्ध एवं यूनानी औषधियों में विषाक्त भारी धातुओं का प्रयोग।

तथ्य: **आयुर्वेद, सिद्ध एवं यूनानी औषधियों में भारी धातुओं का प्रयोग किया जाता है परंतु इसे विशेष अविषाक्तकरण और शुद्धीकरण प्रक्रियाओं और औषधीय जड़ी बूटियों से संसाधित करने के पश्चात शास्त्रीय ग्रंथों में विहित प्रक्रियाओं से तैयार किया जाता है जो सुरक्षित और अविषाक्त होती हैं।**

मिथ्या: आयुष उपचारों का केवल नाममात्र प्रभाव है और इसे केवल पूरक और वैकल्पिक औषधियों के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

तथ्य: **आयुष पद्धतियों का अनुप्रयोग के प्रति समग्र दृष्टिकोण है। इन्हें रोग दशाओं और व्यक्तियों के संपूर्ण स्वास्थ्य परिस्थितियों के अनुरूप प्रयोग किया जाता है।**

मिथ्या: होम्योपैथी का प्रभाव धीरे-धीरे होता है।

तथ्य: **दुर्भाग्यवश यह एक गलत धारणा है कि होम्योपैथी का प्रभाव धीरे-धीरे होता है। कारण यह हो सकता है कि सामान्य जीर्ण व्याधियों के उपचार की व्यापक क्षमता होने के बावजूद होम्योपैथी चिकित्सक के प्रति असामान्य और जीर्ण रोगों के उपचार के लिए ही लोग अभिमुख होते हैं।**

मिथ्या: होम्योपैथी रोग को गंभीर करने के बाद इसका उपचार करता है ।

तथ्य: **यदि रोगी की आवश्यकता के अनुरूप चुनिंदा औषधि दी जाए तो ऐसा सभी मामलों में हमेशा नहीं होता है ।**